



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

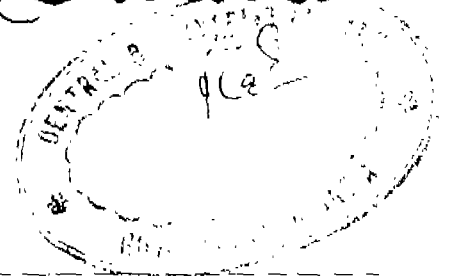
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 300]

नई दिल्ली, बुधस्वतिवार, नवम्बर 8, 2001/कार्तिक 17, 1923

No. 300]

NEW DELHI, THURSDAY, NOVEMBER 8, 2001/KARTIKA 17, 1923

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 8 नवम्बर, 2001

प्रारंभिक निष्कर्ष

**विषय :** चीन जनवादी गणराज्य के मूल के अथवा वहां से निर्यातित थर्मल सेंसेटिव पेपर के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच—  
प्रारंभिक निष्कर्ष

**सं. 30/1/2001-डीजीएडी.**—भारत सरकार 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन तथा संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए,

**क. प्रक्रिया**

2. निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है :—

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके पश्चात् प्राधिकारी भी कहा गया है) को उपरोक्त नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मै. श्री कृष्ण पेपर मिल्स एंड इंडस्ट्रीज लि., नई दिल्ली से लिखित याचिका प्राप्त हुई है जिसमें चीन जनवादी गणराज्य (जिसे इसके बाद सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित थर्मल सेंसेटिव पेपर (जिसे इसके बाद सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है।
- (ii) याचिकाकर्ता द्वारा दायर किए गए आवेदन की आरंभिक जांच करने पर उसमें कुछ खामियों का पता चला था जिन्हें बाद में याचिकाकर्ता द्वारा ठीक कर दिया गया था। इस प्रकार याचिका को समुचित ढंग से प्रलेखित माना गया था।
- (iii) प्राधिकारी ने उक्त नियम के उप-नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले याचिकाकर्ता द्वारा किए गए पाटन के आवेदन की प्राप्ति के विषय में भारत में सम्बद्ध देश के दूतावास को सूचित किया।
- (iv) प्राधिकारी ने 30 जुलाई, 2001 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया जिसमें द्वारा चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-1 के शीर्ष 4809.10 तथा शीर्ष 4811 और 4816 के उपशीर्षों के तहत भी वर्गीकृत थर्मल सेंसेटिव पेपर के आयातों के संबंध में पाटनरोधी कार्रवाई शुरू की गई।
- (v) प्राधिकारी ने उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उद्योग संघों और शिकायतकर्ताओं को भेजी और उन्हें अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया।
- (vi) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम-6 के उप-नियम (3) के अनुसार याचिका की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में सम्बद्ध देश के दूतावास को भेजी।

(vii) प्राधिकारी ने अपेक्षित सूचना प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी :—

1. आरजो विगिन्स पेपर प्रोडक्ट्स (बीजिंग) कं. लि.,  
10, बेजीवान्गलू चाओयांग,  
बीजिंग-100022
2. दाजकॉंग इलेक्ट्रोमैकेनिक टेक्नोलॉजी कं. ए-39,  
लिंझाओकुकुम, जुईसिआनलू हैईडियन,  
बीजिंग-100083
3. हेंगझोन बुलिन पेपर मिल,  
3, तेंगमैनलर, हेंगझोड,  
शेजिंग-31001
4. शानक्सी चामगुआन पेपर इंड. कं. लि.,  
बिक्सिंग रोड, विसयान
5. कर्षीगडाओं झांगटिआंग पेपर कं.,  
डाशा रोड, डिस्ट्रिक्ट-4,  
बिंगडाओं.
6. झापजिआंग कुआंगलौंग पेपर इंड. लि.,  
गुआंगलौंग
7. झापजिआंग जिंगगैंग स्पेशिएलिटी पेपर कं. लि.,  
जिंगगैंग
8. गुआंगडोन गुआनहाओं हाई टैक कं. लि.,  
338वां गुआंगनर, नई स्ट्रीट,  
जुआनबू डिस्ट्रिक्ट, बीजिंग
9. नामजिंग हाओलिन पेपर इंड. लि.,  
301, सी. कम्बाइन हाओकिआओ बिल्डिंग,  
नानजिंग
10. हेंगझोड झेंगडोंग इंड. कं. लि.,  
8वां तल बिंगगसोंग पाविलियन,  
वैस्टर्न लोक डिस्ट्रिक्ट,  
झोंगशैनवेई रोड, हेंगझोड
- (viii) नई दिल्ली में चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को भी  
जांच शुरू होने के बारे में इस अनुरोध के साथ सूचित किया  
गया कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों की प्रश्नावली  
का उत्तर निर्धारित समय के भीतर देने की सलाह दें।
- (ix) धर्मल सैंसीटिव पेपर के निम्नलिखित आयातकों/व्यापारियों  
को प्रश्नावली भेजी गई थी :—
1. कैट्रोनिक्स ऑफिस इक्विपमेंट्स प्रा. लि.,  
54-बी झूग हाउस,  
प्रोक्टर रोड ऑफ लैमिंगटन रोड,  
ग्रैंट रोड (ई) मुम्बई-400001
2. हिन्दुस्तान सेल्स,  
कुमार टाकीज बिल्डिंग, चांदनी चौक,  
दिल्ली-110016
3. 6-आफिस इक्विपमेंट्स प्रा. लि.,  
कमला आरकेड, 669 अन्ना सलाह (मांडट रोड),  
मुम्बई-600006
4. राशनल बिजनैस कारपोरेशन,  
सेन्चुरी हाउस, नं. 10, सत्यावती नगर,  
नई दिल्ली-110021
5. हरीती पेपर्स प्रा. लि.,  
सी-51, मालवीय नगर,  
जयपुर (राजस्थान)
6. वर्धमान पेपर प्रोडक्ट्स,  
गुलाब गंगा काम्प्लैक्स, प्लॉट नं. एक्स-3,  
होटल आएसिस के पीछे  
पीओ नं. 884, एमआईडीसी चालुज,  
औरंगाबाद
7. वैष्णों पेपर प्रोडक्ट्स,  
331, कच्चा मीर आशिक, चावड़ी बाजार,  
दिल्ली-6
8. सोहन लाल नेम चन्द जैन,  
90-चावड़ी बाजार,  
दिल्ली-110006
9. अलंकार स्टेशनरी मार्ट,  
4123, गली सट्टेवाली, नई सड़क,  
दिल्ली-110006
10. मोदी हॉस्पीटल अप्लाईसेज मैनु कं. लि.,  
नं.-1, 80 फीट रोड, सत्य गार्डन,  
सालीग्रामम, चेन्नई-93
11. सोहम इंडस्ट्रीज प्रा. लि.,  
1, भगवान भवन, ग्रांड्ड फ्लोर बिल्डिंग नं.-15,  
दादी सान्तुक लेन, चौरा बाजार, जेएसएस रोड,  
मुम्बई-400002
12. टोकुशु मेनर पेपर मैनु कं.,  
1/1, अम्बातुर रोड, पोतोल, चेन्नई-600066
13. हरियाणा ट्रेडर्स प्रा. लि.,  
हरियाणा बिल्डिंग, 4035-36,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006
14. श्याम ट्रेडर्स, 70-ए,  
कमला नगर, दिल्ली-110006
15. वर्षा ट्रेडर्स,  
3, मन्सूर मन्जिल, 80, मोदी स्ट्रीट,  
फोर्ट मुम्बई
16. एशियन कोटेड पेपर प्रा. लि.,  
आर एन 5, 4855/56, 24-अन्सारी रोड,  
दरिया गंज, नई दिल्ली
17. दी एम्बेसी ऑफ फिनलैंड,  
ई-3, न्याय मार्ग, चाणक्यपुरी,  
नई दिल्ली-110021
18. एक्सैल मार्क,  
144, लैंधी चेदटी स्ट्रीट, चेन्नई-600001
19. आल इंडिया धर्मल पेपर डीलर्स एसोसिएशन,  
आफिस नं.-05, 4855/24,  
अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-110002

- (x) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) और वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से अनुरोध किया गया कि वे जांच की अवधि सहित पिछले 3 वर्षों के दौरान भारत में किए गए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यौरे प्रस्तुत करें।
- (xi) किसी भी निर्यातक, आयातक, व्यापारी और संघ ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है।
- (xii) याचिकाकर्ता से क्षति और उत्पादन लागत के सम्बंध में अतिरिक्त सूचना मांगी गई थी, जो प्रस्तुत भी कर दी गई थी।
- (xiii) प्राधिकारी ने विभिन्न पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों का अगोपनीय अंश उपलब्ध रखा, जिसे प्राधिकारी द्वारा सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा गया और उसे हितबद्ध पार्टियों द्वारा निरीक्षण हेतु खुला रखा।
- (xiv) इस अधिसूचना में ..... से किसी हितबद्ध पक्ष द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई सूचना प्रदर्शित होती है, जिसे नियमों के तहत प्राधिकारी ने ऐसा ही माना है।
- (xv) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध करवाई गई सूचना का आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया।
- (xvi) प्राधिकारी ने लागत जांच भी की और सामान्य स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर संबद्ध वस्तु की ईष्टतम उत्पादन लागत तथा भारत में इसके निर्माण और बिक्री की लागत का निर्धारण किया गया था।
- (xvii) इस जांच में 1 अप्रैल, 2000 से 31 दिसम्बर, 2000 तक की अवधि शामिल है।
- (xviii) व्यापक परिचालन के लिए जांच-शुरूआत के नोटिस की प्रतियां फिक्की, सीआईआई, एसोचैम इत्यादि को भी भेजी गई थीं।

### (ख) याचिकाकर्ता के विचार

3. याचिकाकर्ता ने अपने अनुरोधों में निम्नलिखित प्रमुख मुद्दे उठाए हैं :—

#### (क) घरेलू उद्योग पर

याचिकाकर्ता मै. श्री कृष्णा पेपर मिल्स एंड इंडस्ट्रीज लि. घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करते हैं क्योंकि उनका थर्मल सेंसिटिव पेपर के भारतीय उत्पादन में 100% हिस्सा बनाता है और इसलिए वह उपरोक्त नियमों के अर्थों के भीतर घरेलू उद्योग है।

(ख) विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के बारे में :—थर्मल सेंसिटिव पेपर एक ऐसा पेपर है, जिस पर रसायनों का एक विशेष लेप चढ़ा होता है ताकि बेस पेपर को थर्मल सेंसिटिव गुणधर्म प्रदान किए जा सकें। पेपर पर यह प्रभाव उक्त पेपर पर नियंत्रित थर्मल ऊष्मा देकर पैदा किया जाता है। थर्मल सेंसिटिव पेपर का उपयोग मुख्यतः इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए संदेश रिकार्ड करने हेतु किया जाता है जहां मशीन का प्रयोग ऊष्मा करणों की संवेदनशील के जरिए संदेश, रिपोर्ट करने में किया जाता है। इसका उपयोग मुख्यतः फैक्स मशीनों में किया जाता है इसका इस्तेमाल ईसीजी मशीनों और अन्य चिकित्सा उपकरणों, सेस्मोग्राफिक मशीनों, एसरलाइन्स बैगेज टैगिंग, टिकटों, बोर्डिंग कार्डों इत्यादि में भी किया जाता है। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि टीएसपी सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 48 के अंतर्गत वर्गीकृत है। इस उत्पाद का कोई अनन्य सीमाशुल्क वर्गीकरण नहीं है। तथापि, आमतौर पर यह सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची 1 के उपशीर्ष 4809.10 अर्थात् “कार्बन अथवा इसी प्रकार का कॉपिंग पेपर” में शामिल होता है। याचिकाकर्ता ने यह भी दावा किया है कि टीएसपी की स्वीकृति सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण के शीर्ष 4811 और 4816 के विभिन्न उप शीर्षों के तहत भी दी जाती है। यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक हैं और ये वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं हैं।

घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किया जा रहा थर्मल सेंसिटिव पेपर और चीन से निर्यातित थर्मल सेंसिटिव पेपर भौतिक एवं रासायनिक कार्यात्मक उपयोग, विनिर्देशनों जैसी विशेषताओं के संबंध में तुलनीय हैं। ये दोनों विभिन्न विशेषताओं के हिसाब से काफी मिलते-जुलते हैं और ये तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापीनीय हैं। जहां तक कतिपय रासायनिक लेप जिसकी वजह से पेपर पर ऊर्जा सेंसिटिविटी उत्पन्न होती है, चढ़ाने के लिए प्रयुक्त प्रौद्योगिकी का संबंध है, याचिकाकर्ता और चीन के उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी में कोई ज्ञात भिन्नता नहीं है। इस प्रकार, याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित थर्मल सेंसिटिव पेपर और चीन जनवादी गणराज्य से आयातित संबद्ध वस्तु में कोई भिन्नता नहीं है। इसलिए याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादन किया जा रहा थर्मल सेंसिटिव पेपर और संबद्ध देश से आयात किया जा रहा थर्मल सेंसिटिव पेपर के समान उत्पाद हैं।

#### (ग) पाटन के बारे में

(i) याचिकाकर्ता ने कहा है कि घरेलू उद्योग को पहले जापान और ईयू के निर्यातकों द्वारा पाटन किए जाने की वजह से क्षति हो रही थी। अब यह पाटन चीन से भी होना शुरू हो गया है। याचिकाकर्ता ने सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु संबद्ध देश में घरेलू बिक्री सौदों के बारे में कोई सूचना नहीं दी है। याचिकाकर्ताओं ने अनुरोध किया है कि निर्यातक चीन के होने के कारण उन्हें गैर-अर्थव्यवस्था वाले देश के निर्यातक माना जाए और इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण 15-7-99 की अधिसूचना सं. 44/99-सी शु (एनटी) द्वारा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 में किए गए

संशोधनों के अनुसार किया जाए। इस नियमावली, जिसमें 31-5-2001 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 28/2001 (एनटी) के द्वारा आगे और संशोधन किया गया है, के अनुसार अन्य बातों के साथ-साथ, गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश से कीमत अथवा परिकलित लागत के आधार पर अथवा किसी ऐसे तीसरे देश से भारत समेत अन्य देशों के लिए कीमत के आधार पर किया जाएगा अथवा जहां यह संभव न हो वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उचित लाभ मार्जिन यदि आवश्यक हो, को शामिल करने के लिए विधिवत् समायोजन करके सामान वस्तु हेतु भारत में वास्तव में भुगतान की गई अथवा भुगतान योग्य कीमत समेत किसी अन्य उचित आधार पर किया जाएगा। अतः याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि चीन के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक खर्चों और उचित लाभ मार्जिन शामिल करने हेतु विधिवत् समायोजित भारत में संबद्ध वस्तु की अनुमानित उत्पादन लागत के बारे में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर किया जाए।

(ii) याचिकाकर्ता ने गौण स्रोतों के आंकड़ों के आधार पर अप्रैल-दिसम्बर, 2000 के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा और मूल्य के आधार पर निर्यात कीमत का दावा किया है। संबद्ध वस्तु के लिए विशिष्ट सीमा शुल्क वर्गीकरण नहीं है इसलिए याचिकाकर्ता ने डीजीसीआई एंड एस द्वारा प्रकाशित किए गए आंकड़ों पर विश्वास नहीं किया है। याचिकाकर्ता नियमित रूप से गौण स्रोतों से आयात संबंधी सूचना की निगरानी करता है और मैसर्स इन्फोरमेंट, मुंबई और उसने एरिजम इन्फोलाइन, चेन्नई द्वारा संकलित सूचना पर विश्वास किया है। उन्होंने सीआईएफ निर्यात कीमत 5.94 रुपए प्रति वर्ग मी. निकाला है। याचिकाकर्ता ने यह भी कहा है कि आयातक संबद्ध वस्तु की पुनर्बिक्री खरीद कीमत से कम कीमत पर कर रहे हैं और इसलिए प्रकाशित गौण स्रोतों की सूचना अनुसार निर्यात कीमत विश्वसनीय नहीं है। उन्होंने यह भी दावा किया है कि निर्यात कीमत का निर्धारण सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9क 1(ख) को ध्यान में रख कर किया जाए जिसमें यह कहा गया है।

“किसी वस्तु के संबंध में निर्यात कीमत का तात्पर्य निर्यातक देश अथवा क्षेत्र से निर्यातित वस्तु की कीमत से है और जिन मामलों में कोई निर्यात नहीं है अथवा जिनमें आयातक और निर्यातक अथवा किसी तीसरे पक्ष के बीच एसोसिएशन अथवा किसी प्रतिपूरक व्यवस्था के कारण निर्यात कीमत विश्वसनीय है उन मामलों में निर्यात कीमत का परिकलन उस कीमत के आधार पर किया जा सकता है जिस कीमत पर किसी स्वतंत्र क्रेता को आयातित वस्तु की पहली बार पुनर्बिक्री की जाती है अथवा यदि उक्त वस्तु की पुनर्बिक्री किसी स्वतंत्र क्रेता को नहीं की जाती है अथवा उसकी पुनर्बिक्री आयातित स्थिति में नहीं की जाती है तो निर्यात कीमत का परिकलन ऐसे उचित आधार पर किया जा सकता है जिसे उपनियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार तय किया जाए।

याचिकाकर्ता ने उक्त तर्क के आधार पर अर्थात् भारत में आयातक द्वारा टीएसपी की पुनर्बिक्री कीमत के आधार पर निर्यात कीमत का परिकलन करके निर्यात कीमत 3 रुपए सीआईएफ प्रति वर्ग मीटर निकाला है। कारखाना स्तर पर निर्यात कीमत निकालते समय याचिकाकर्ता ने 50 अमरीकी डालर प्रति मी. टन का दर से समुद्री भाड़े, निर्यात कीमत के 0.5% की दर से समुद्री बीमा, भारतीय ड्रेटिंग के लिए कमीशन 3% और चीन के एजेंटों के लिए 3% कमीशन, चीन में 2% की दर से स्वदेशीय परिवहन, पत्तन हैंडलिंग प्रभार 2% और 1% की दर से पैकिंग लागत के समायोजन का दावा किया है। इस समायोजनों के पश्चात् कारखाना स्तर पर निर्यात कीमत गौण स्रोतों के प्रकाशित आंकड़ों के आधार पर 113 अमरीकी डालर प्रति वर्ग मी. और भारत में आयातित टीएसपी की पुनर्बिक्री कीमत के आधार पर 0.065 अमरीकी डालर प्रति वर्ग मी. निकाला गया है।

(iii) संबद्ध देश से थर्मल सेंसिटिव पेपर के आयात के लिए पाटन मार्जिन 45.33% बताया गया है जबकि निर्यात कीमत का निर्धारण गौण स्रोत के आंकड़ों से किया गया है और पाटन मार्जिन 153.03% बताया गया है जबकि निर्यात कीमत का परिकलन भारत में आयातित टीएसपी की पुनर्बिक्री कीमत के आधार पर किया गया है।

#### (घ) क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में

- (i) घरेलू उद्योग को पहले जापान और ईयू के निर्यातकों द्वारा किए गए पाटनों से क्षति हो रही थी। उनका पाटन संबद्ध देश से होना शुरू हो गया है।
- (ii) यद्यपि घरेलू उद्योग की बिक्रियों में वृद्धि हुई है तथापि बिक्रियों में यह वृद्धि बढ़े हुए उत्पादन के अनुपात में नहीं हुई है जिसके फलस्वरूप भण्डार में वृद्धि हुई है।
- (iii) उत्पादन लागत में वृद्धि को देखते हुए, घरेलू उद्योग को बिक्री कीमत में वृद्धि करने के लिए बाध्य किया गया है। तथापि, घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु के लिए लाभकारी कीमत प्राप्त करने में सक्षम नहीं है और उसे उत्पादन लागत से कम बिक्री कीमत पर संबद्ध वस्तु की बिक्री करने के कारण काफी घाटा हुआ है, जिसके फलस्वरूप निरन्तर घाटा हो रहा है।
- (iv) संबद्ध देश से आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है, जिसके फलस्वरूप बाजार में कीमतों में काफी कटौती हुई है।
- (v) घरेलू बाजार में टीएसपी की बिक्री पहुंच मूल्य से कम कीमत पर की जा रही है। याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया है कि निर्यातक और आयातकों के बीच क्षतिपूर्ति की कुछ व्यवस्था है। परिकलित निर्यात कीमत के आधार पर पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम है जिससे भारतीय बाजार में कीमतों काफी घट रही हैं।

- (vi) याचिकाकर्ता को संबद्ध वस्तु के विनिर्माण एवं उसकी बिक्री में घाटा हुआ है क्योंकि उनकी निवल बिक्री प्राप्ति उत्पादन की यूनिट लागत से कम रही है। अतः उत्पादन में वृद्धि के बाद की याचिकाकर्ता ने टीएसपी के विनिर्माण के कार्य को लाभदायक नहीं पाया गया है जिससे घरेलू की वास्तविक क्षति हुई है।
- (vii) घरेलू उद्योग को हुई क्षति को संबद्ध देश से पाटित आयातों के साथ जोड़ा जा सकता है। भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु की मांग में कोई कमी नहीं आई है।
- (viii) घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी विश्वभर के उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी से तुलनीय है। प्रत्येक उत्पादक उपलब्ध सुविधाओं के आधार पर अपनी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करता है इसलिए क्षति के लिए किसी प्रौद्योगिकी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।
- (ix) घरेलू उद्योग को जो क्षति हुई है उसका मुख्य कारण पाटित आयात हैं क्योंकि आयातित सामग्री की पहुँच लागत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम होने के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत उत्पादन लागत से काफी कम रही है।
- (x) पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कम बिक्री के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप उत्पादन को सीमित करने के बावजूद उद्योग के पास स्टॉक में वृद्धि हुई है।

#### ग. निर्यातकों, आयातकों और प्रयोक्ताओं के विचार

4. किसी भी ज्ञात निर्यातक, आयातक, प्रयोक्ता और उद्योग एसोसिएशन ने उनको भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं/एसोसिएशन के संबंध में प्राधिकारी द्वारा भेजे गए पत्रों को डाक विभाग के प्राधिकारियों में डिलीवर किए बिना वापस लौटा दिया है :—

1. हिन्दुस्तान सेल्स,  
कुमार टाकीज बिल्डिंग, चांदनी चौक,  
दिल्ली-110006
2. सोहुम इंडस्ट्रीज प्रा. लि.,  
1, भगवान भवन, भूतल, बिल्डिंग नं.-15  
दाडी सांतुक लेन, चीरा बाजार, जेएसएस रोड,  
मुम्बई-400002
3. ऑल इंडिया थर्मल पेपर डीलर्स एसोसिएशन,  
ऑफिस नं.-05, 4855/24,  
अंसारी रोड, दरियागंज,  
नई दिल्ली-110002

याचिकाकर्ता से कहा गया था कि वह उपरोक्त पार्टियों के सही पत्तों की जानकारी दे। याचिकाकर्ता ने सूचित किया है कि उसने इन हितबद्ध पार्टियों के संबंध में अपनी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार सही सूचना दी है। याचिकाकर्ता ने यह भी कहा है कि "ऑल इंडिया थर्मल पेपर डीलर्स एसोसिएशन" नाम की और इस प्रकार की कोई एसोसिएशन नहीं है।

9. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पाद किये जा रहे थर्मल सेंसिटिव पेपर विभिन्न विशेषताओं के संबंध में चीन से निर्यातित थर्मल सेंसिटिव पेपर से काफी मिलता जुलता है और ये तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। इस प्रकार याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित थर्मल सेंसिटिव पेपर और चीन जनवादी गणराज्य से आयातित संबद्ध वस्तु में कोई अंतर नहीं है। इसलिए, इस जांच के प्रयोजन से प्राधिकारी का मानना है कि याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादन किया जा रहा थर्मल सेंसिटिव पेपर संबद्ध देश से आयातित थर्मल सेंसिटिव पेपर के समान वस्तु है।

#### घ. घरेलू उद्योग

10. यह याचिका मैसर्स श्री कृष्ण पेपर मिल्स एंड इंडस्ट्रीज लि. नई दिल्ली द्वारा दायर की गई है। प्राधिकारी का मानना है कि याचिकाकर्ता भारत में संबद्ध वस्तु का एकमात्र उत्पादक है और इसलिए वह नियम 5(3) (क) और (ख) तथा नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने के आधार संबंधी मापदंड को पूरा करता है।

**ब. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन****11. सामान्य मूल्य**

धारा 9(क) (1)(ग) के अधीन किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :

- (i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथाभिदिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो; या
- (ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा;
  - (क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु का उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या
  - (ख) उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ उद्गम के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत :

**सामान्य मूल्य**

12. प्राधिकारी ने धारा 9(क) (1)(ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के उद्देश्य से सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी। तथापि, संबद्ध देश के किसी निर्यातक से कोई उत्तर नहीं मिला था। याचिकाकर्ता ने कहा है कि निर्यातकों को चीन का निर्यातक होने के कारण उन्हें गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के निर्यातकों के रूप में माना जा सकता है और इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-1 में दिनांक 15-7-99 की अधिसूचना सं. 44/99-सी.शु. (एनटी) और दिनांक 31-5-2001 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 28/2001 (एनटी) द्वारा किए गए संशोधन के अनुसार किया जा सकता है। संशोधित नियमों में अन्य बातों के साथ यह प्रावधान है कि गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश में कीमत अथवा परिकलित मूल्य अथवा किसी ऐसे तीसरे देश से भारत समेत अन्य देशों के लिए कीमत के आधार पर किया जाएगा अथवा जहां यह संभव न हो वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए यदि आवश्यक हो, विधिवत समायोजित समान उत्पाद हेतु भारत में वास्तव में भुगतान की गई अथवा भुगतान योग्य कीमत समेत किसी अन्य उचित आधार पर किया जाएगा। चूंकि किसी निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है और कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है इसलिए प्राधिकारी का मानना है कि संबद्ध देश के किसी निर्यातकों ने नियमों में की गई व्यवस्थानुसार प्राधिकारी को सहयोग नहीं किया है। घरेलू उद्योग ने चीन जनवादी गणराज्य में सामान्य मूल्य के संबंध में सूचना उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर प्रस्तुत की है। संबद्ध देश के निर्यातकों के असहयोग को देखते हुए प्राधिकारी ने उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग भिन्न-भिन्न जी एस एम (ग्राम प्रतिवर्ग मीटर) में थर्मल सेंसिटिव पेपर का उत्पादन करता है। इसलिए घरेलू उद्योग द्वारा भिन्न-भिन्न जीएसएम में उत्पादित थर्मल सेंसिटिव पेपर को ध्यान रखते हुए संबद्ध देश के लिए संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य का निर्धारण सत्यापन के अधीन रहते हुए प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजन से . . . . अमरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. किया गया है।

**निर्यात कीमत**

13. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से निर्यात बिक्रियों के बारे में सूचना मुहैया कराने में किसी भी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है। इसलिए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना पर भरोसा किया है जोकि गौण स्रोतों अर्थात् मै. इनफोर्स्मेंट, मुम्बई और मै. एग्जम इन्फोलाइन, चैन्नई द्वारा संकलित आंकड़ों पर आधारित है। प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में डीजीसीआई एंड एस से भी सूचना प्राप्त की है और यह पाया है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के संबंध में जांच अवधि के आयात संबंधी आंकड़े गौण स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों से मेल खाते हैं। जहां तक जांच अवधि के दौरान और पूर्ववर्ती दो वर्षों के लिए आयातों की कुल मात्रा का संबंध है प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत गौण स्रोतों के आयात संबंधी आंकड़ों पर भरोसा किया है। याचिकाकर्ता ने यह भी कहा है कि आयातक अर्जन लागत से कम कीमत पर संबद्ध वस्तु की पुनर्बिक्री कर रहे हैं और इसलिए प्रकाशित गौण स्रोत के अनुसार निर्यात कीमत भरोसेमंद नहीं है। उन्होंने दावा किया है कि निर्यात कीमत का निर्धारण सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9क 1(ख) को ध्यान में रखते हुए किया जाए जिसमें यह उल्लेख है कि :

“किसी वस्तु के संबंध में निर्यात कीमत का तात्पर्य निर्यातक देश अथवा क्षेत्र से निर्यातित वस्तु की कीमत से है और जिन मामलों में कोई निर्यात कीमत नहीं है अथवा जिनमें आयातक और निर्यातक अथवा किसी तीसरे पक्ष के बीच एसोसिएशन अथवा किसी प्रतिपूरक व्यवस्था के कारण निर्यात कीमत अविश्वसनीय है उन मामलों में निर्यात कीमत का परिकलन उस कीमत के आधार पर किया जा सकता है जिस कीमत पर किसी स्वतंत्र क्रेता को आयातित वस्तु की पहली बार पुनर्बिक्री की जाती है अथवा यदि उक्त वस्तु की पुनर्बिक्री किसी स्वतंत्र क्रेता को नहीं की जाती है अथवा उसकी पुनर्बिक्री आयातित स्थिति में नहीं की जाती है तो निर्यात कीमत का परिकलन ऐसे उचित आधार पर किया जा सकता है जिसे उपनियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार तय किया जाए।”

14. प्राधिकारी पाते हैं कि याचिकाकर्ता ने अपने इस दावे के समर्थन में पर्याप्त औचित्य और साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है कि गौण स्रोत के आकड़ों के अनुसार निर्यात कीमत की अनदेखी की जाए और आयातित थर्मल सेंसिटिव पेपर की पुनः बिक्री के आधार पर परिकलित निर्यात कीमत को स्वीकार किया जाए। भारतीय घरेलू बाजार में थर्मल सेंसिटिव पेपर की बिक्री से संबंधित केवल एक अकेला बीजक जोकि संभवतः संबद्ध देश से आयातित थर्मल सेंसिटिव पेपर में से ही एक है, को प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त नहीं माना है कि निर्यातक और आयातक के बीच एक प्रतिपूरक व्यवस्था हो सकती है और जिससे इस निर्यात कीमत को अविश्वसनीय माना जा सकता है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता ने प्राधिकारी से संबद्ध देश के संबद्ध वस्तु के आयात संबंधी आकड़ों को स्वीकार करने के लिए संपर्क किया है। जहां एक तरफ प्राधिकारी गौण स्रोत के अनुसार आयातों की मात्रा को स्वीकार करने की दिशा में अग्रसर हुए हैं वहीं दूसरी तरफ प्राधिकारी याचिकाकर्ता के इस दावे में कोई औचित्य नहीं पाते हैं कि गौण स्रोत के अनुसार निर्यात कीमत की पूर्णतया अनदेखी की जाए। तथापि प्राधिकारी ने यह पाया है कि थर्मल सेंसिटिव पेपर की वर्गमीटर प्रति मीट्रिक टन मात्रा एक आयात खेप से दूसरी आयात खेप में अलग-अलग होती है। यह पाया गया है कि एक मामले में यह 9288 वर्ग मीटर प्रति मीट्रिक टन रही है जोकि न्यूनतम है और अधिकतम 18181 वर्ग मी. टन प्रति मी. टन तक रही है। प्राधिकारी का यह विचार है कि आयात संबंध आंकड़ों में दर्शाई गई वर्ग मीटर के रूप में मात्रायातों आयातों की सही मात्रा को दर्शाने वाली नहीं हो सकती है या भिन्न-भिन्न जीएसएम के कारण प्रति मी. टन वर्ग मीटर की मात्रा अलग-अलग है। किसी भी निर्यातक या आयातक को प्राधिकारी द्वारा कोई अन्य दृष्टिकोण अपनाने के लिए कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की है। चूंकि थर्मल सेंसिटिव पेपर का उत्पादन अलग-अलग जीएसएम में किया जाता है इसलिए प्रत्येक मीट्रिक टन के लिए वर्ग मीटर की मात्रा उत्पादित जीएसएम के अनुसार भिन्न हो सकती है। अगर माप की इकाई को भार के रूप में माना जाता है तो भारित औसत निर्यात कीमत से उचित तुलना के प्रयोजन से संबद्ध वस्तु के अलग-अलग जीएसएम आयातों के लिए अधिक प्रतिनिधि सूचना उपलब्ध होगी। इस प्रकार प्राधिकारी का यह मानना है कि आयात के समय यथाव्योचित आयातों का भार और डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों में प्रदर्शित भार संबद्ध वस्तु की इकाई कीमत निर्धारण करने के लिए एक उपयुक्त आधार हो सकता है। तदनुसार इन निष्कर्षों के लिए प्राधिकारी ने गौण स्रोत के आंकड़ों के अनुसार भार के रूप में संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत के निर्धारण पर विचार किया है जिसकी डीजीसीआई एंड एस से प्राप्त सूचना द्वारा पुष्टि की गई है।

15. याचिकाकर्ता ने समुद्री भाड़े के लिए 50 अमरीकी डालर प्रति मी. टन की दर से, समुद्री बीमा के लिए निर्यात कीमत के 0.5% की दर से, कमीशन भारतीय इंडेंटिंग एजेंटों के लिए 3% और चीन के एजेंटों के लिए 3% की दर से, चीन में स्वदेशी परिवहन के लिए 2% की दर से, पत्तन हैंडलिंग प्रभार 2% और 1% पैकिंग लागत के लिए समायोजनों का दावा किया है। प्राधिकारी ने 50 अमरीकी डालर प्रति मी. टन की दर से समुद्री भाड़े, निर्यात कीमत के 0.5% की दर से समुद्री बीमा, 3% की दर से कमीशन, 2% की दर से चीन में स्वदेशी परिवहन, 2% की दर से पत्तन हैंडलिंग हेतु समायोजनों की अनुमति दी है। इसलिए औसत निर्यात कीमत में से इन कारणों से ..... रुपए ..... अमरीकी डालर/कि.ग्रा. का समायोजन किया गया है। इन समायोजनों के बाद जांच अवधि के लिए कारखाना द्वारा स्तर पर निवल निर्यात कीमत ..... रुपए ..... अमरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. निकाली गई है।

#### पाटन मार्जिन

16. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के निर्धारण को शासित करने वाले सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम और पाटनरोधी नियमों में यथा-निर्धारित सिद्धांतों का नियमों के अनुबंध -1 में विस्तृत वर्णन है। सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना करने के प्रयोजन से प्राधिकारी ने व्यापार के समान स्तर पर गणना की है एवं इसकी तुलना की है। कारखाना-स्तर पर परिकलित उत्पादन लागत पर आधारित सामान्य मूल्य की तुलना कारखाना-स्तर पर भारत औसत निर्यात कीमत के साथ की गई है। प्राधिकारी ने इस तथ्य पर विधिवत ध्यान दिया है कि थर्मल सेंसिटिव पेपर का उत्पादन अलग-अलग जीएसएम में किया जाता है।

17. परिकलित उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य ..... रुपए/कि.ग्रा. या ..... अमरीकी डालर/कि.ग्रा. निकलता है। समायोजनों के पश्चात कारखाना-स्तर पर उप-रोक्तानुसार निकाली गई निवल निर्यात कीमत ..... रुपए/कि.ग्रा. या ..... अमरीकी डालर/कि.ग्रा. बैठती है। संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के निर्यात के संबंध में पाटन मार्जिन निर्यात कीमत का 91.63% बनता है।

#### ज. क्षति

18. पाटनरोधी नियमावली के नियम-11 में निम्नानुसार उल्लेख है;

“क्षति का निर्धारण”

- (1) विनिर्दिष्ट देशों से हुए आयातों के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी आगे इस आशय का निष्कर्ष दर्ज करेगा कि भारत में ऐसी वस्तु के आयात से भारत में स्थापित किसी उद्योग को वास्तविक क्षति होती है अथवा क्षति का खतरा उत्पन्न होता है अथवा किसी उद्योग को स्थापित करने में अत्यधिक बाधा आती है;
- (2) निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग को हुई क्षति, घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के खतरे, घरेलू उद्योग की स्थापना में आने वाली अत्यधिक बाधा और पाटित आयातों एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर इसके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव समेत सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और इन नियमों के अनुबंध-II में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार करेंगे। पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-II में उल्लिखित क्षति के निर्धारण संबंधी सिद्धांतों में यह उपबंध किया गया है कि :
  - (i) क्षति के निर्धारण में इन दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी :— (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु की

घरेलू बाजार कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव।

- (ii) पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेगा कि क्या भारत में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में अथवा समग्र रूप में पाटित आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। नियम 18 के उप-नियम (2) में यथा-उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संदर्भ में निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेगा कि क्या पाटित आयातों से भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में कीमतों में काफी कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों से अन्यथा काफी हद तक कीमतों में कमी आयी है अथवा कीमतों में वृद्धि होने से रोका गया है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गयी होती।

19. प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान और पिछले दो वर्षों अर्थात् 1998-99 और 1999-2000 के दौरान आयातों की मात्रा से संबंधित सूचना की जांच की है। डीजीसीआईएस ने, जांच-शुरूआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में, आंकड़ें भेजे हैं जिनमें जांच अवधि और पिछले दो वर्षों के दौरान आईटीसी (एचएस) वर्गीकरण 4809, 4811 और 4816 के तहत थर्मल सेंसिटिव पेपर के आयातों को दर्शाया गया है। पिछले दो वर्षों अर्थात् 1998-99 और 1999-2000 के संबंध में डीजीसीआई एंड एस आंकड़ों से यह स्पष्ट नहीं होता है कि क्या संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का कोई आयात हुआ है क्योंकि सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम में थर्मल सेंसिटिव पेपर के लिए कोई विशिष्ट प्रविष्टि नहीं है। तथापि, याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत गौण स्रोत के अनुसार वर्ष 1998-99 और 1999-2000 के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का कोई आयात नहीं हुआ था। प्राधिकारी ने सूचना पर विश्वास किया है। जहां तक जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के हुए आयातों का संबंध है, डीजीसीआई एंड एस आंकड़ों और गौण स्रोत से प्राप्त आंकड़ों मेल खाते हैं। गौण स्रोत से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार जांच अवधि के दौरान थर्मल सेंसिटिव पेपर का कुल आयात 4558659 वर्ग मीटर का हुआ था। भार के रूप में इसे 401.50 मीट्रिक टन के बराबर माना गया है। गौण स्रोत और डीजीसीआई एंड एस आंकड़ों के अनुसार इस अवधि के दौरान संबद्ध देश से 505288 वर्ग मी. या 44.503 मीट्रिक टन का आयात हुआ था। प्राधिकारी ने पाया है कि जांच अवधि के दौरान ये आयात कुल आयातों का 11.08% रहे हैं जो निर्धारित न्यूनतम स्तर से अधिक है। प्राधिकारी गौण स्रोत से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित याचिकाकर्ता द्वारा उपरोक्तानुसार प्रस्तुत सूचना के आधार पर बढ़ते हुए आयातों की प्रवृत्ति की तुलना करना उचित समझते हैं। 1998-99 और 1999-2000 के दौरान संबद्ध देश से थर्मल सेंसिटिव पेपर के आयात शून्य थे और जांच अवधि के दौरान ये आयात 44.503 मी.टन के हुए थे। कुल आयातों में इन आयातों का हिस्सा 11.08% था जिसे प्राधिकारी उस स्थिति में उचित मानते हैं जब पिछले दो वर्षों में शून्य हिस्से से इसकी तुलना की जाती है। अतः प्राधिकारी संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा को काफी अधिक मानते हैं क्योंकि पाटित आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है।

#### कीमतों में भारी कटौती

20. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में पाटित आयातों के कारण भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है। प्राधिकारी ने पाया है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की औसत निवल बिक्री प्राप्ति ..... रुपए/किग्रा. रही है और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों का औसत पहुंच मूल्य ..... रुपए/किग्रा. रहा है। प्राधिकारी ने पाया है कि आयातों का पहुंच मूल्य संबद्ध वस्तु की निवल बिक्री प्राप्ति से काफी कम रहने की वजह से भारत में सामान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से भारी कीमत कटौती हो रही है। आयातों की कीमतों में भारी कटौती होने की वजह से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

#### कीमत ह्रास

21. प्राधिकारी ने पाया है कि घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमतों को पिछले वर्ष के स्तर से ..... रुपए/किग्रा. से बढ़ाकर जांच अवधि के दौरान ..... रुपए/किग्रा. करने में समक्ष रहा है। यह वृद्धि कच्ची सामग्री और रसायन की लागत में बढ़ोतरी के कारण हुई है। तथापि, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग बिक्री कीमत को उस स्तर तक बढ़ाने में अक्षम रहा है जिस स्तर पर उसे अपनी पूरी उत्पादन लागत मिल सके और उचित लाभ प्राप्त हो सके। संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों का औसत मूल्य ..... रुपए/किग्रा. रहा जो कि उत्पादन लागत से काफी कम है। इससे घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमत को लाभकारी स्तर पर ले जाने से रोका गया है। इस प्रकार, प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सामान वस्तु की कीमतों में ह्रास हुआ है।

#### भण्डार

22. घरेलू उद्योग ने बताया है कि उद्योग के पास इस तथ्य के बावजूद अंतिम स्टॉक बढ़ रहा है कि याचिकाकर्ता उत्पादन के स्तरों की मानीटरिंग करके स्टॉक के स्तर को विनियमित कर रहा है। प्राधिकारी ने इस दावे की जांच की है और यह देखा है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के तैयार उत्पाद के भण्डार का स्तर पिछले वर्षों से काफी अधिक है। उद्योग के पास थर्मल सेंसिटिव पेपर का अंतिम स्टॉक वित्तीय वर्ष 1999-2000 के अंत में पड़े हुए स्टॉक से ढाई-गुना अधिक रहा था। वर्ष 1998-99 की तुलना में उद्योग द्वारा जांच अवधि के दौरान रखा गया औसत स्टॉक पांच गुना अधिक था। प्राधिकारी पाते हैं कि घरेलू उद्योग को थर्मल सेंसिटिव पेपर का उच्च स्टॉक होने के कारण भी वास्तविक क्षति हुई है।

#### क्षति का खतरा

23. उपरोक्त नियम 11, अनुबंध-II के अंतर्गत जब क्षति के बारे में निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में "पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में मूल्यों पर उनका प्रभाव, ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामकारी प्रभावों समेत



सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए" घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा। उपरोक्त के अलावा, क्षति के खतरे के संबंध में उपरोक्त नियमों के अनुबंध-II के पैरा (vii) में निम्नानुसार उल्लेख है :

“(vii) वास्तविक क्षति के खतरे का निर्धारण तथ्यों पर आधारित होगा और न कि केवल आरोप, अनुमान या परोक्ष संभावना पर। परिस्थितियों में आने वाले ऐसे बदलाव, जिससे ऐसे स्थिति पैदा होगी जिसमें पाटन से क्षति होगी, का स्पष्ट तौर पर पूर्वानुमान लगाया जाना चाहिए और इसे आसन्नवर्ती होना चाहिए। वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी के संबंध में निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ निम्न कारकों पर विचार करेगा :

- (क) भारत में पाटित आयातों की एक महत्वपूर्ण वृद्धि दर जो पर्याप्त रूप से बढ़े हुए आयातों की संभावना को दर्शाती है।
- (ख) निर्यातक की क्षमता का पर्याप्त रूप से मुक्त निपटान या उसमें अटल रूप से हुई पर्याप्त वृद्धि जो किन्हीं अतिरिक्त निर्यातों को खपाने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार के पर्याप्त रूप से बढ़े हुए निर्यातों की संभावना को प्रदर्शित करती है।
- (ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर किए गए हैं जिनसे घरेलू कीमतों पर महत्वपूर्ण दबाव पड़ेगा या कीमतें नियंत्रित होगी और इससे आने के आयातों की मांग में वृद्धि की संभावना होगी; और
- (घ) वस्तुओं के स्टॉक की जांच की जा रही है।”

24. प्राधिकारी पाते हैं कि संबद्ध देश से आयात कुल हुए आयातों में 10.08 प्रतिशत तक हैं जो पिछले वर्ष शून्य थे। प्राधिकारी पाते हैं कि संबद्ध देश से इन आयातों की पाटित कीमत से भारत में समान उत्पाद की कीमतें कम होने की भारी आशंका है। यह भी काफी संभावना है कि पाटित कीमत पर काफी बड़ी मात्रा में आयात हो सकते हैं जिससे घरेलू उद्योग को क्षति का गंभीर खतरा उत्पन्न हो रहा है। इसलिए अपने पास उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को होने वाली वास्तविक क्षति का गंभीर खतरा है।

#### झ. कारणात्मक संबंध

25. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के बारे में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के सिद्धांत (iv) में बताया गया है;

“संबंधित” घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उन सभी संबंधित आर्थिक कारक और संकेतक का मूल्यांकन शामिल होगा जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है जैसे बिक्री में स्वाभाविक तथा संभावित गिरावट, लाभ उत्पादन, बाजार का हिस्सा, उत्पादकता, निवेश से प्राप्त आय अथवा क्षमता उपयोग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकदी के प्रवाह, रोजगार, मजदूरी वृद्धि, पूंजीगत निवेश गुटाने की क्षमता पर पड़ने वाला वास्तविक तथा संभावित नकारात्मक प्रभाव।

#### याचिकाकर्ताओं के विचार

26. याचिकाकर्ताओं ने कहा है कि उद्योग को क्षति संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के कारण हुई है। चूंकि आयातित थर्मल सैसीटिव पेपर का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है, इसलिए घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमत उत्पादन की लागत से काफी कम रखनी पड़ी। इसलिए उद्योग क्षति रहित कीमत प्राप्त करने में असमर्थ रहा। पाटित आयातों के कारण कीमत में कटौती होने के कारण घरेलू उद्योग को गंभीर वित्तीय हानि हुयी है। उत्पादन को सीमित करने के बावजूद पाटित आयातों से घरेलू उद्योग के स्टॉक में प्रत्यक्ष रूप से वृद्धि हुयी है। उद्योग को अपनी बिक्री तथा उत्पादन में वृद्धि करने से भी रोका गया है। घरेलू उद्योग ने यह भी कहा है कि संबद्ध वस्तु की मांग में कोई कमी नहीं आयी है और उद्योग को हुए नुकसान के लिए मांग में आई किसी कमी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच तथा उसके निष्कर्ष

27. भारत में घरेलू उद्योग पर प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उक्त नियमों के अनुबंध-II (iv) के अनुसार उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों पर विचार किया है जैसे उत्पादन, बिक्री, अंतिम स्टॉक, बाजार का हिस्सा, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति आदि। प्राधिकारी ने यह भी पाया है कि जब पूर्ववर्ती वर्ष 1999-2000 की मांग के साथ जांच अवधि की मांग (वार्षिक) की तुलना की गयी तो जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में 58 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है।

#### 28. प्राधिकारी के निष्कर्ष:

उपर्युक्त अनुसार विभिन्न आर्थिक मानदण्डों की जांच के बाद प्राधिकारी निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुंचे हैं:—

- (i) घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग वर्ष 1999-2000 में 57.74 प्रतिशत था जो बढ़कर जांच की अवधि के दौरान 72.95 प्रतिशत तक हो गया और उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण अधिक क्षमता उपयोग करने से रोका गया।
- (ii) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में वर्ष 1999-2000 की तुलना में जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुयी। तथापि, वह पाटित आयातों के कारण क्षति रहित कीमत से कम रही। उद्योग को पाटित आयातों की कम कीमतों के कारण वित्तीय हानि हुयी।

- (iii) घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती के कारण नुकसान हुआ। वे उत्पादन की लागत को वसूल करने के लिए अपनी बिक्री कीमत में वृद्धि नहीं कर सके क्योंकि पाटित आयातों का पहुँच मूल्य उत्पादन की लागत से बहुत कम था।
- (iv) पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की तैयार वस्तुओं की स्टॉक सूची के स्तर में पिछले वर्षों की तुलना में जाँच की अवधि में वृद्धि हुई है।
- (v) इस उत्पाद की मांग में कमी नहीं आयी है, इसलिए इससे उद्योग की क्षति में कोई वृद्धि नहीं हुई है।
- (vi) उपर्युक्त आर्थिक मापदंड संवयी तथा सामूहिक रूप से यह सिद्ध करते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटन के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

#### ज. भारतीय उद्योग के हित

29. सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे उद्योग को नुकसान हो रहा है और भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः स्थिति लाना जो कि देश के सामान्य हित में है।

30. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से इस उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं तथापि भारतीय बाजार में स्वच्छ प्रतिस्पर्धा पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों द्वारा प्राप्त होने वाले अनुचित लाभों को पाटनरोधी उपायों से रोका जा सकेगा, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और इससे संबद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध हो सकेंगे। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से संबद्ध देश से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे, इसलिए उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

#### ड. पहुँच मूल्य

31. अंतिम जाँच परिणामों तक प्रारंभिक निष्कर्ष हेतु संबद्ध वस्तु के लिए पहुँच मूल्य का निर्धारण भारत सी आई एफ निर्यात कीमत में (धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर) सभी प्रकार के लागू सीमाशुल्क और 1 प्रतिशत उतराई प्रभार जोड़ने के बाद किया गया है।

#### ड. निष्कर्ष

32. पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि :

- (i) संबद्ध देश से भारत में थर्मल संसेटिव पेपर का निर्यात इसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया।
- (ii) भारतीय उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और इसे आगे और क्षति होने का खतरा है।
- (iii) यह क्षति संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है।

33. प्राधिकारी घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के उद्देश्य से अंतिम रूप से निर्धारण होने तक चीन जनवादी गणराज्य से ताप संवेदी पेपर (टी एस पी) के सभी आयातों पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं। प्राधिकारी ने पाटनरोधी शुल्क की ऐसी राशि की सिफारिश करने पर विचार किया है, जिसे यदि लगाया जाता है तो वह पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी। इस प्रयोजन के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के औसत पहुँच मूल्य की तुलना जाँच की अवधि के लिए यथा निर्धारित घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकार बिक्री कीमत से की गयी थी।

34. तदनुसार प्राधिकारी सिफारिश करते हैं कि अंतिम निर्धारण होने तक चीन जनवादी गणराज्य मूल के और/अथवा वहाँ से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची I के शीर्ष 4811 तथा 4816 के उपशीर्ष के तहत तथा सीमाशुल्क शीर्ष 4809.10 के अंतर्गत आने वाले ताप संवेदी पेपर (टी एस पी) के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस बारे में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से नीचे दिए गए अनुसार अनंतिम शुल्क लगाया जाए। उक्त पाटनरोधी शुल्क निम्नानुसार होंगे :—

देश	पाटनरोधी शुल्क (अमरीकी डालर प्रति किग्रा.)
चीन जनवादी गणराज्य के सभी निर्यातक/उत्पादक	0.967

#### ड. आगे की प्रक्रिया

35. प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाएगा :—

- (क) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों से इन निष्कर्षों के बारे में टिप्पणियाँ आमंत्रित करते हैं और उन पर अंतिम निष्कर्ष निकालते समय विचार किया जाएगा।
- (ख) प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ताओं तथा अन्य हितबद्ध ज्ञात पार्टियों को अलग से संबोधित किया जा रहा है, जो पत्र के प्रेषण की तारीख से 40 दिनों के अंदर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है।
- (ग) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों को मौखिक और उसके बाद लिखित उत्तर के लिए अवसर प्रदान करेंगे। मौखिक सुनवाई की तारीख और समय के बारे में ज्ञात हितबद्ध पक्षों को बाद में सूचित किया जाएगा।
- (घ) प्राधिकारी यथोचित सीमा तक आगे जाँच करेंगे।
- (ङ) अंतिम निष्कर्षों की घोषणा करने से पहले प्राधिकारी आवश्यक तथ्यों को प्रकट करेंगे।

एल. वी. सप्ताश्रयि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY****(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING & ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 8th November, 2001

**PRELIMINARY FINDINGS**

**Subject: Anti-dumping investigation concerning imports of Thermal Sensitive Paper originating in or exported from Peoples' Republic of China - preliminary findings.**

**No. 30/1/2001-DGAD.—** The Government of India having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

**A. PROCEDURE**

2. The procedure described below has been followed:-

- (i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Shree Krishna Paper Mills & Industries Limited, New Delhi on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Thermal Sensitive Paper (hereinafter referred to as subject goods) originating in and exported from Peoples' Republic of China (hereinafter referred to as subject country) ;
- (ii) Preliminary scrutiny of the application filed by the petitioner revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was, therefore, considered as properly documented.
- (iii) The Authority notified the Embassy of subject country in India about the receipt of dumping application made by the petitioners before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 *supra*;
- (iv) The Authority issued a Public Notice dated 30<sup>th</sup> July, 2001 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings

concerning imports of Thermal Sensitive Paper originating in or exported from Peoples' Republic of China classified under heading 4809.10 and also under sub-headings of heading 4811 and 4816 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975;

- (v) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers, industry association and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing.
- (vi) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the petition to all the known exporters and Embassy of subject country in India.
- (vii) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following exporters:
  - 1. Arjo Wiggins Paper Products (Beijing) Co. Ltd.,  
10, Baiziwanlu, Chaoyang,  
Beijing-100022.
  - 2. Dajkong Electromechanic Technology Co.,  
A-39, Lindaokucum, Xueyceanlu,  
Heidian, Beijing-100083.
  - 3. Zhong Wulin Paper Mill,  
J, Langmenler, Hangzhou,  
Zhejiang-31001.
  - 4. Shanxi Changuan Paper Ind. Co. Ltd.  
Beixin Road, Xian,
  - 5. Qingdao Zhangtian Paper Co.  
Dasha Road, District-4.  
Wingdao
  - 6. Zhanjianang Quanglong Paper Ind. Ltd.,  
Guanglong.
  - 7. Zhanjiang Xingang Speciality Paper Co.  
Ltd.  
Xingang.
  - 8. Guangdong Guanhao High Tech Co. Ltd.  
338<sup>th</sup> Guanganmer, Nei Street,  
Xuanwu District, Beijing.

9. Nanjing Haolin Paper Ind. Ltd.,  
301, C, Combine Haoqiao Bldg.,  
Nanjing.
10. Hangzhou Zhangdong Ind. Co. Ltd.,  
8<sup>th</sup> Floor Qingsong Pavilion,  
Western-Lake District,  
Zhongshanbei Road, Hangzhou.

- (viii) The Embassy of Peoples' Republic of China in New Delhi was also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time;
- (ix) The questionnaire was sent to the following importers/traders of Thermal Sensitive Paper:

1. Cantronics Office Equipments Pvt. Limited,  
54-B Drug House,  
Proctor Road of Lamington Road,  
Grant Road (E) Mumbai-400007.
2. Hindustan Sales,  
Kumar Talkis Building, Chandni Chowk,  
Delhi-110006.
3. VI Office Equipments Pvt. Limited,  
Kamla Arcade, 669 Anna-Salai(Mount Road),  
Mumbai-600006.
4. Rational Business Corporation,  
Century House, N-10, Satyawati Nagar,  
New Delhi-110021.
5. Hariti Papers Pvt. Limited,  
C-51, Malviya Nagar,  
Jaipur (Rajasthan)
6. Vardhman Paper Products,  
Gulab Ganga Complex, Plot No.X-3, Behind Hotel Oasis,  
P.O. No.994, MIDC WALUJ, Aurangabad.
7. Vaishano Paper Products,  
331,Kucha Mir Ashiq, Chawri Bazar,  
Delhi-6.

8. Sohan Lal Nem Chand Jain,  
90-Chawari Bazar, Delhi-110006.
9. Alankar Stationery Mart,  
4123, Gali Satte Wali, Nai Sarak,  
Delhi-110006.
10. Modi Hospital Appliances Mfg. Co Limited,  
No.1,80 Feet Road, Satya Garden,  
Saligramam,  
Chennai-93.
11. Sohurm Industries Pvt. Limited,  
1, Bhagwan Bhawan, Gr. Floor Building No.15, Dadi Santuk  
Lane, Chira Bazar, JSS Road, Mumbai-400002.
12. Tokushu Menor Paper Mfg. Co.,  
1/1, Ambattur Road, Polol, Chennai-600066.
13. Haryana Traders P. Limited,  
Haryana Building, 4035-36,  
Chawari Bazar, Delhi-110006.
14. Shyam Traders, 70 A,  
Kamla Nagar,  
Delhi-110006.
15. Varsha Traders,  
3, Mansoor Manzil 80, Modi Street,  
Fort Mumbai.
16. Asian Coated Paper P. Ltd.,  
RN 5, 4855/56, 24-Ansari Road,  
Daryaganj, New Delhi.
17. The Embassy of Finland,  
E-3, Nyay Marg, Chanakyapuri,  
New Delhi-110021.
18. Excell Mark,  
144, Lenghi Chetty Street,  
Chennai-600001.
19. All India Thermal Paper Dealers Association,  
Office No. 05, 4855/24,  
Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002.

- (x) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods made in India during the past three years, including the period of investigation.
- (xi) None of the exporters, importers, traders and association has filed any response to the questionnaire.
- (xii) Additional information regarding injury and cost of production was also sought from the petitioner, which was also furnished;
- (xiii) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;
- (xiv) \*\*\* in this notification represents information furnished by the interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- (xv) The Authority verified the information given by the domestic industry to the extent considered necessary;
- (xvi) The Authority also conducted cost investigation and worked out optimum cost of production and cost to make and sell subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles;
- (xvii) The investigation covered the period from 1<sup>st</sup> April, 2000 to 31<sup>st</sup> December, 2000.
- (xviii) Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.

## **B. PETITIONER'S VIEWS**

3. The petitioner have made the following main points in their submissions:

**(a) On Domestic Industry:**

The petitioner M/s. Shree Krishna Paper Mills and Industries Limited represent the domestic industry as they account for 100% of the Indian production of Thermal Sensitive Paper and therefore they constitute the domestic industry within the meaning of the Rules Supra.

**(b) On Product under consideration and like article:**

Thermal Sensitive Paper is a paper coated with a special mix of chemicals for providing thermal sensitive properties to the base paper. Impression on the paper is created by virtue of controlled thermal heat exposed on the paper. Thermal Sensitive Paper is primarily used for recording messages for electronic equipments where the machine is used to record messages and reports through sensitivity of heat rays. It is primarily used in fax machines. It is also used in ECG Machines and other medical equipments, Seismographic machines, Airlines baggage tagging, tickets, boarding cards etc. Petitioner has claimed that TSP is classified under chapter 48 of the Customs Tariff Act. The product does not have a dedicated Customs Classification. However, it generally gets covered under sub-heading 4809.10 i.e. 'Carbon or similar copying paper' of Schedule I of the Customs Tariff Act. Petitioner has claimed that TSP is also cleared under different sub-headings of heading 4811 and 4816 of the Customs Tariff Classification. These Classifications are indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation.

Thermal Sensitive Paper being produced by the domestic industry and the Thermal Sensitive Paper exported from China are comparable in terms of characteristics, such as, physical and chemical, functional uses, specifications. The two closely resemble in terms of various characteristics and these are technically and commercially substitutable. There is no known difference in the technology employed by the petitioner and producers in China as regards the technology involved in coating of certain chemical mixture which results in heat sensitivity on the paper. There is thus no difference in the Thermal Sensitive Paper produced by the petitioner and the subject goods imported from Peoples' Republic of China. Therefore, Thermal Sensitive Paper being produced by the petitioner is a like product to the Thermal Sensitive Paper being imported from subject country.

**(c) On Dumping:**

(i) The petitioner has stated that the domestic industry was earlier suffering injury from dumping by the exporters from Japan and EU. Now, dumping has started from China. The petitioner has not produced information in respect of domestic sale transactions in the subject country for determination of normal value. The petitioners have requested that the exporters, being from China, may be treated as those from non-market economy and therefore, the normal value may be determined as per amendment made to Annexure 1 to the Anti Dumping Rules vide Notification No. 44/99-CUS (NT), dated 15-7-99. As per these Rules, which have been further amended vide Custom Notification No. 28/2001(NT), dated 31-5-2001, inter alia, the normal value in respect of



non-market economy countries shall be determined on the basis of the price or constructed value in a market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India, or where it is not possible, on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. Therefore, the petitioner has claimed that normal value in respect of China may be determined on the best information available with regard to estimate of cost of production of the subject goods in India, duly adjusted to include selling, general and administrative expenses and a reasonable profit margin.

(ii) The petitioner has claimed the export price on the basis of volume and value of imports of subject goods from subject country during April – December, 2000 based on the figures of secondary sources. There is no dedicated Customs Classification for subject goods and therefore the data published by DGCI&S has not been relied upon by the petitioner. The petitioner regularly monitors import information from secondary sources and has relied upon the information compiled by M/s. Informant, Mumbai and Exim Infoline, Chennai. They have worked out CIF export price as Rs.5.94 per sq. mtr. The petitioner has also stated that the importers are reselling the subject goods at a price less than the cost of acquisition and therefore the export price as per the published secondary source are not reliable. They have also claimed that the export price may be determined keeping in view section 9A 1(b) of the Customs Tariff Act which states that:

**“Export Price”, in relation to an article, means** the price of the article exported from the exporting country or territory and in cases where there is no export price or where the export price is unreliable because of association or a compensatory arrangement between the exporter and the importer or a third party, the export price may be constructed on the basis of the price at which the imported articles are first resold to an independent buyer or if the article is not resold to an independent buyer or not resold in the condition as imported, on such reasonable basis as may be determined in accordance with the rules made under sub-section (6)”.

The petitioner has worked out the export price as Rs.3.63 CIF per sq. meter based on their above contention i.e. by constructing the export price on the basis of the resale price of TSP by the importer in India. While working out the export price at ex-factory level the petitioner has claimed adjustments on account of ocean freight @ US \$ 50 per MT, marine insurance @ 0.5% of export price, commission 3% for Indian indenting agents and 3% for agents in China, inland transportation in China @ of 2%, port handling charges 2% and 1% packing costs. After these adjustments the export price has been worked out at ex-factory level

as US \$ .113 per sq. mtr. on the basis of published exports data of secondary source & US \$ 0.065 per sq. meter as per the resale price of imported TSP in India.

- (iii) The dumping margin for import of Thermal Sensitive Paper from the subject country has been stated at 45.33% when the export price is determined from the secondary source data and the dumping margin is stated to be 153.03% when export price is constructed on the basis of resale price of imported Thermal Sensitive Paper in India.

**(d) On Injury and Causal Link:**

- (i) The domestic industry was earlier suffering injury from dumping by the exporters from Japan and EU. Now, dumping has started from the subject country.
- (ii) Though the sales of the domestic industry have increased, the increase in sales has not been in proportion to the increased production, resulting in increase in inventory.
- (iii) The domestic industry has been forced to increase selling price in view of increase in cost of production. However, the domestic industry is not able to get remunerative price for the subject goods and has suffered significant losses due to selling of the subject goods at selling price lower than the cost of production resulting in losses continuously.
- (iv) The landed price of imports from the subject country is significantly below the selling price of the domestic industry, resulting in severe price undercutting in the market.
- (v) The imported Thermal Sensitive Paper is being sold in the domestic market at a price below the landed value. The petitioner has alleged that there is some compensatory arrangement between the exporter and the importers. The landed value based on the constructed export price is significantly below the cost of production of the domestic industry causing severe price suppression in the Indian market.
- (vi) The petitioner has suffered losses in the manufacture and sale of the subject goods as their net sales realization has been below the unit cost of production. Therefore, even after increased production the petitioner has not found the operation of manufacture of Thermal Sensitive Paper profitable causing material injury to the industry.
- (vii) The injury to the domestic industry can be linked to the dumped imports from the subject country. There has not been any contraction in demand of the subject goods in the Indian market.

- (viii) The technology adopted by the domestic industry is comparable to the technology used by the producers world-over. Every producer fine tunes its process on the basis of the available facilities and therefore the injury cannot be attributed to any technology reason.
- (ix) The injury to the domestic industry is solely due to the dumped imports as the industry has suffered due to sales price significantly below the cost of production in view of landed cost of the imported material being significantly below the selling price of the domestic industry.
- (x) The sub-optimal sales of the domestic industry due to dumped imports had directly resulted in increasing stock with the industry in spite of restricting the production.

**C. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND USERS :**

4. None of the known exporters, importers, users and industry association has responded to the questionnaires sent to them. The communications sent by the Authority relating to these investigations have been returned un-delivered by the postal authorities in respect of the following exporters/users/association:

1. Hindustan Sales,  
Kumar Talkis Building, Chandni Chowk,  
Delhi-110006.
2. Sohum Industries Pvt. Limited,  
1, Bhagwan Bhawan, Gr. Floor Building No.15,  
Dadi Santuk Lane, Chira Bazar, JSS Road,  
Mumbai-400002.
3. All India Thermal Paper Dealers Association,  
Office No. 05, 4855/24,  
Ansari Road, Daryaganj,  
New Delhi-110002.

The petitioner was advised to give information regarding the correct addresses of the above parties. The petitioner has informed that they had given the correct information to the best of their knowledge in respect of these interested parties. The petitioner has also stated that there is no association by the name and style of 'All India Thermal Paper Dealers Association'.

#### **D. EXAMINATION AND FINDINGS BY THE AUTHORITY**

5. The submissions made and the information provided by the domestic industry have been examined and considered while arriving at these findings and wherever appropriate have been dealt hereinafter.

6. The Authority confirms the absence of any direct response from the exporters from Peoples' Republic of China in the form and manner prescribed and having made the findings with regard to exports from the subject country on the basis of the fact available to it as per Rule 6(8) *supra*.

7. The cases of new exporters or those stated to be willing to give price undertaking shall be considered, on request, by the Authority in accordance with the Rules *supra*.

#### **E. Product Under Consideration And Like Article**

8. Thermal Sensitive Paper is a paper coated with a special mix of chemicals for providing thermal sensitive properties to the base paper. Thermal Sensitive Paper is primarily used for recording messages for electronic equipments where the machine is used to record messages, reports through sensitivity of heat rays. It is primarily used in fax machines. It is also used in ECG Machines and other medical equipments, Seismographic machines, Airlines baggage tagging, tickets, boarding cards etc. TSP is classified under chapter 48 of the Customs Tariff Act. The product does not have a dedicated Customs Classification. However, it generally gets covered under sub-heading 4809.10 i.e. 'Carbon or similar copying paper' of Schedule I of Customs Tariff Act. TSP is also cleared under different sub-headings of heading 4811 and 4816 of the Customs Tariff Classification. These Classifications are indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation.

9. Thermal Sensitive Paper being produced by the domestic industry and the Thermal Sensitive Paper exported from China closely resemble in terms of various characteristics and are technically and commercially substitutable. There is thus no difference in the Thermal Sensitive Paper produced by the petitioner and the subject goods imported from Peoples' Republic of China. Therefore, for the purpose of this investigation the Authority holds that Thermal Sensitive Paper being produced by the petitioner is a like product to the Thermal Sensitive Paper being imported from subject country.

#### **F. DOMESTIC INDUSTRY**

10. The petition has been filed by M/s. Shree Krishna Paper Mills and Industries Limited, New Delhi. The Authority holds that the petitioners are the only producer of subject goods in India and therefore they satisfy the standing to

file the petition on behalf of the domestic industry as per Rule 5(3)(a) and (b) and Rule 2(b)

**G. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING:**

**11. Normal Value:**

Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section(6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either -
  - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
  - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

12. The Authority sent questionnaires to the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). However, no response was received from any exporters from the subject country. The petitioner has stated that the exporters being from China may be treated as those from non-market economy and therefore, the normal value may be determined as per amendment made to Annexure I of Anti Dumping Rules vide Notification No. 44/99-CUS (NT), dated 15-7-99 and Custom Notification No. 28/2001(NT), dated 31-5-2001. The amended Rules inter alia state that the normal value in respect of non-market economy countries shall be determined on the basis of the price or constructed value in a market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India, or where it is not possible, on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. Since none of the exporters has responded to the questionnaire and have not furnished any information, the Authority therefore holds that none of the exporters from the subject country have cooperated with the Authority as envisaged under the Rules. The domestic industry has

furnished information with regard to the normal value in Peoples' Republic of China based on the constructed cost of production. In view of non-cooperation from the exporters from the subject country, the Authority has determined normal value on the basis of the constructed cost of production. The Authority notes that the domestic industry produces the Thermal Sensitive Paper in different GSM (Grams per square meter). After taking into account the Thermal Sensitive Paper produced by the domestic industry in different GSM the normal value for the subject goods for the subject country is therefore, determined as US\$ \*\*\* per kg for the purpose of preliminary findings subject to verification.

### **Export price**

13. The Authority notes that none of the exporters has cooperated in furnishing information regarding export sales from the subject country. The Authority has therefore relied upon the information regarding export price furnished by the petitioner which is based on the data compiled by secondary sources, viz., M/s. Informant, Mumbai and M/s. Exim Infoline, Chennai. The Authority has also received information with regard to the imports of subject goods from the DGCI&S and have found that the import figures for the period of investigation in respect of the subject goods from the subject country match with that of the secondary sources. As regards the total volume of imports during the period of investigation and for the preceding two years the Authority has relied upon the import data of the secondary sources furnished by the petitioner. The petitioner has also stated that the importers are reselling the subject goods at a price less than the cost of acquisition and therefore the export price as per the published secondary source are not reliable. They have claimed that the export price may be determined keeping in view section 9A 1(b) of the Customs Tariff Act which states that:

**“Export Price”, in relation to an article, means the price of the article exported from the exporting country or territory and in cases where there is no export price or where the export price is unreliable because of association or a compensatory arrangements between the exporter and the importer or a third party, the export price may be constructed on the basis of the price at which the imported article are first resold to an independent buyer or if the article is not resold to an independent buyer or not resold in the condition as imported, on such reasonable basis as may be determined in accordance with the rules made under sub-section (6)”.**

14. The Authority finds that enough justification and evidence has not been furnished by the petitioner in support of their claim to disregard the export price as per the secondary source data and to adopt the constructed export price based on resale of imported Thermal Sensitive Paper. Only one solitary invoice relating to sale of Thermal Sensitive Paper in the Indian domestic market, supposedly from out of Thermal Sensitive Paper imported from the subject

country, has not been considered sufficient by the Authority to conclude that there may be a compensatory arrangement between the exporter and the importer and thereby to treat the export price as unreliable. Moreover, the petitioner has approached the Authority to accept the import data of subject goods from the subject country. When on one hand the Authority has gone ahead to accept the volume of imports as per the secondary source data, the Authority does not find any merit in the claim of the petitioner to disregard totally the export price as per the secondary source. However, the Authority has observed that square metre per metric tonne quantity of Thermal Sensitive Paper varies from one import consignment to another import consignment. It has been found that in one case it has been 9288 square meters per metric tonne, which is the lowest and the maximum has been as much as 18181 square meters per tonne. The Authority holds the view that the quantity in terms of square meter shown in the import data may not be either reflecting the correct quantity of import or due to varying GSM the square metre quantity per metric tonne varies. There has not been any response from either the exporters or the importers for the Authority to take any other view. As the Thermal Sensitive Paper is produced in different GSM the square metre quantity for each metric tonne may vary depending upon the GSM produced. If the unit of measurement is considered in weight terms the weighted average export price will provide a more representative information of different GSM imports of subject goods for purposes of a proper comparison. The Authority thus holds the view that the weight of the imports as declared at the time of imports and shown in the data of DGCI&S may be a proper basis to determine the unit price of the subject goods. Accordingly for these findings, the Authority has considered the determination of the export price of the subject goods in terms of weight as per the secondary source data, which has been corroborated by the information received from the DGCI&S.

15. The petitioner has claimed adjustments on account of ocean freight @ US \$ 50 per MT, marine insurance @ 0.5% of export price, commission 3% for Indian indenting agents and 3% for agents in China, inland transportation in China @ of 2%, port handling charges 2% and 1% packing costs. The Authority has allowed adjustments on account of ocean freight @ US \$ 50 per MT, marine insurance @ 0.5% of export price, commission @ 3%, inland transportation in China @ 2%, port handling charges @2%. Therefore, an adjustment of RS.\*\*\* US\$\*\*\*/kg. has been made on these accounts from the average export price. After making these adjustments the net export price at ex-factory level has been worked out as Rs.\*\*\*US \$\*\*\* per kg. for the period of investigation.

### **Dumping margin**

16. The principles governing the determination of normal value, export price and the dumping margin as laid down in the Custom Tariff Act and the Anti Dumping Rules are elaborated in Annexure I to the Rules. For the purpose of the fair comparison between the normal value and export price, the Authority has

made calculations and comparisons at the same level of trade. Normal Value based on the constructed cost of production at ex-factory level has been compared with the weighted average export price at ex-factory level. The Authority has given due regard to the fact that Thermal Sensitive Paper is produced in different GSM.

17. The normal value based on the constructed cost of production works out to Rs.\*\*\* per kg. or US\$ \*\*\*per kg. The net export price at ex-factory level worked out as above after making adjustments comes to Rs.\*\*\* /kg. US\$\*\*\* /kg. The dumping margin in respect of the exports of the subject goods from the subject country comes to 91.63% of the export price.

## **H. INJURY**

18. Rule 11 of Anti Dumping Rules reads as follows:

“Determination of Injury:

(1) In the case of imports from specified countries, the designated authority shall record a further finding that import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry or materially retards the establishment of any industry in India;

(2) The designated authority shall determine the injury to domestic industry, threat of injury to domestic industry, material retardation to establishment of domestic industry and a causal link between dumped imports and injury, taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure II to these rules.”

The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti-Dumping Rules lay down that:

- i. A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products.
- ii. While examining the volume of dumped imports, the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of Rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price under-cutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or



whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.

19. The Authority has examined the information regarding volume of imports during the period of investigation and the two preceding years, i.e. 1998-99 and 1999-2000. The DGCIS, in response to the initiation notification, sent data showing imports of Thermal Sensitive Paper during the POI and preceding two years under ITC (HS) Classification 4809, 4811 and 4816. In respect of the preceding two years, viz., 1998-99 and 1999-2000 it is not clear from DGCIS data, if there was any import of the subject goods from the subject country as there is no dedicated entry for Thermal Sensitive Paper in the Customs Tariff Act. However, as per secondary source data furnished by the petitioners there were no imports of subject goods during the years 1998-99 and 1999-2000 from the subject country. The Authority relies on this information. As regards the imports during the POI of subject goods from subject country, the DGCIS data and secondary sources data match. The total imports of Thermal Sensitive Paper during POI as per secondary source data are 4558659 sq. mtr. In terms of weight this is considered equivalent to 401.50MT. The imports from the subject country during this period were 505288 sq. mtr or 44.503 MT as per the secondary source and DGCIS data. The Authority finds that these imports being 11.08% of the total imports during POI are above de-minimis. The Authority considers it appropriate to compare the trend of increasing imports on the basis of the information furnished as above by the petitioner, based on secondary sources data. The imports of Thermal Sensitive Paper from subject country were nil during 1998-99 and 1999-2000 and these were 44.503 MT during the POI. The share of these imports in total imports was 11.08% which the Authority considers significant when compared to nil share in previous two years. Therefore, the Authority considers the volume of dumped imports from subject country to be significant as there has been an increase in the dumped imports in absolute terms.

### **Significant Price Under cutting**

20. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree. The Authority finds that average net sales realization of the domestic industry during the POI has been Rs. \*\*\* per kg. and the average landed value of imports of the subject goods from subject country has been Rs. \*\*\* per kg. The Authority finds that due to the landed value of imports being significantly lower than the net sales realisation of subject goods there is significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India. The price under-cutting of imports have caused material injury to the domestic industry.

**Price Suppression:**

21. The Authority finds that the domestic industry has been able to raise its selling price to Rs. \*\*\* per kg. during the POI from previous level of Rs. \*\*\* per kg. This has been due to increased cost of raw material and chemicals. However, in view of dumped imports the domestic industry has not been able to raise the selling price to a level to recover its full cost of production and to achieve a reasonable return. The average landed value of imports of subject goods from subject country has been Rs. \*\*\* per kg. which is significantly lower than the cost of production. This has prevented the domestic industry to raise its selling price to a remunerative level. The Authority thus concludes that the dumped imports has caused price suppression of the like product produced by the domestic industry.

**Inventory:**

22. The domestic industry has stated that closing stock with the industry have been increasing, in spite of the fact that the petitioner is regulating the stock levels by monitoring production levels. The Authority has examined the claim and has seen that the level of finished product inventory of the domestic industry during the period of investigation was significantly higher than the previous years. The industry held finished goods inventory of Thermal Sensitive Paper which was two and a half times higher than the inventory at the end of financial year 1999-2000. In comparison to year 1998-1999 the average inventory held by the industry during the POI was about five times higher. The Authority finds that the domestic industry has also suffered material injury on account of higher inventory of Thermal Sensitive Paper.

**Threat of Injury**

23. Under Rule 11 *supra*, Annexure II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, *".....taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....."*. Further to above, regarding threat of injury, para (vii) of Annexure II of Rules *supra*, reads as under:-

- " (vii) A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances which would create a situation in which the dumping would cause injury must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the designated authority shall consider, *inter alia*, such factors as:

- (a) a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;
- (b) sufficient freely disposable, or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;
- (c) whether imports are entering at prices that will have a *significant depressing or suppressing effect on domestic prices*, and would likely increase demand for further imports; and
- (d) inventories of the article being investigated.”

24. The Authority finds that the imports from subject country grew from nil during the previous year to command an 11.08% share in the total imports. The Authority finds the dumped price of these imports from the subject country to hold a significant threat in depressing the price of the like product in India. There is every likelihood that imports may keep coming at dumped price in larger quantities causing serious threat of injury to the domestic industry. On the basis of the evidence available before it, the Authority therefore concludes that there is a serious threat of material injury being caused to the domestic industry on account of dumped imports of subject goods from subject country.

#### I. CAUSAL LINK

25. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry the principle (iv) of Annexure-II of the Anti-Dumping Rules states:

“The examination of the impact of the dumped imports on the domestic Industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilisation of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”

#### Views of the Petitioners

26. The petitioners have stated that injury to the industry has been caused by the dumped imports of subject goods from the subject country. As the landed value of the imported Thermal Sensitive Paper is significantly below the selling price of the domestic industry, the industry has been forced to keep its selling price significantly below the cost of production. Therefore, the industry has not

been able to realize a non-injurious price. The price suppression suffered due to dumped imports has resulted in severe financial losses to the domestic industry. The dumped imports have directly resulted in increasing stock of the domestic industry in spite of restricting their production. The industry has also been prevented from increasing its sales and production. The domestic industry has also stated that there has not been a contraction of demand of the subject goods and the injury to the industry cannot be attributed to any fall in demand.

### **Examination and Findings of the Authority**

27. For the examination of the impact on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of industry as production, sales, closing stock, market share, profitability, net sales realisation etc. in accordance with Annexure-II (iv) of the Rules supra. The Authority has also found that the demand for the subject goods during the period of investigation (POI) has shown an increase of 58% when the demand during the POI (annualized) is compared with the demand in the preceding year 1999-2000.

### **28. Conclusions of the Authority:**

After examining the various economic parameters as above the Authority has come to the following conclusions:

- i) The capacity utilization of the domestic industry has increased from 53.74% in 1999-2000 to 72.95% during POI and the production has also increased. However, the domestic industry has been prevented from utilization of higher capacity due to dumped imports.
- ii) The selling price of the domestic industry increased during the POI as compared to year 1999-2000. However, the same has been below the non-injurious price (NIP) on account of dumped imports. The industry has suffered financial losses due to price undercutting of dumped imports.
- iii) The domestic industry has suffered due to price suppression. They have not been able to raise their selling price to recover the cost of production, as the landed value of the dumped imports has been significantly lower than the cost of production.
- iv) The inventory level of finished goods of the domestic industry has increased during the POI in comparison to the previous years due to the dumped imports.
- v) The demand of the product has not decreased and has, therefore, not contributed to injury to the industry.
- vi) The above economic parameters cumulatively and collectively establish that domestic industry has suffered material injury on account of dumping.

## **J. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST**

29. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

30. The Authority recognises that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product; however, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

## **K. LANDED VALUE**

31. The Landed Value has been determined for the subject goods after adding on the weighted CIF export price, the applicable level of custom duties (except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A) and one percent towards landing charges for the purposes of preliminary determination pending final findings.

## **L. CONCLUSIONS**

32. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- (i) Thermal Sensitive Paper has been exported from the subject country to India below its normal value;
- (ii) the Indian industry has suffered material injury and is being threatened with further injury;
- (iii) the injury has been caused by the dumped imports from the subject country.

33. The Authority considers it necessary to impose an anti dumping duty provisionally, pending final determination, on all imports of Thermal Sensitive Paper from Peoples' Republic of China in order to remove the injury to the domestic industry. The Authority has considered to recommend the amount of anti-dumping duty which, if levied, would be adequate to remove the injury caused to the domestic industry on account of dumping. The average landed value of the imports of subject goods, for the purpose, were compared with the non-injurious selling price of the domestic industry, determined for the period of investigation

34. Accordingly, the Authority recommends that provisional anti dumping duties as set out below be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all imports of Thermal Sensitive Paper falling under Customs Heading 4809.10 and also under sub-headings of heading 4811 and 4816 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975; originating in and/or exported from the Peoples' Republic of China pending final determination. The anti dumping duties shall be as follows:-

Country	Anti dumping duty(US\$ per kg.)
All Exporters/Producers of Peoples' Republic of China	0.967

#### M. FURTHER PROCEDURE

35. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:-

- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- (b) Exporters, producers, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of despatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
- (c) The authority would provide opportunity to all the interested parties for making oral submissions, which have to be rendered thereafter in writing. The date and time for the oral hearing shall be communicated to all known interested parties subsequently;
- (d) The Authority would conduct further verifications to the extent deemed necessary;
- (e) The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

L.V. SAPTHARISHI, Designated Authority